वार्षिक प्रतिवेदन 2016-17

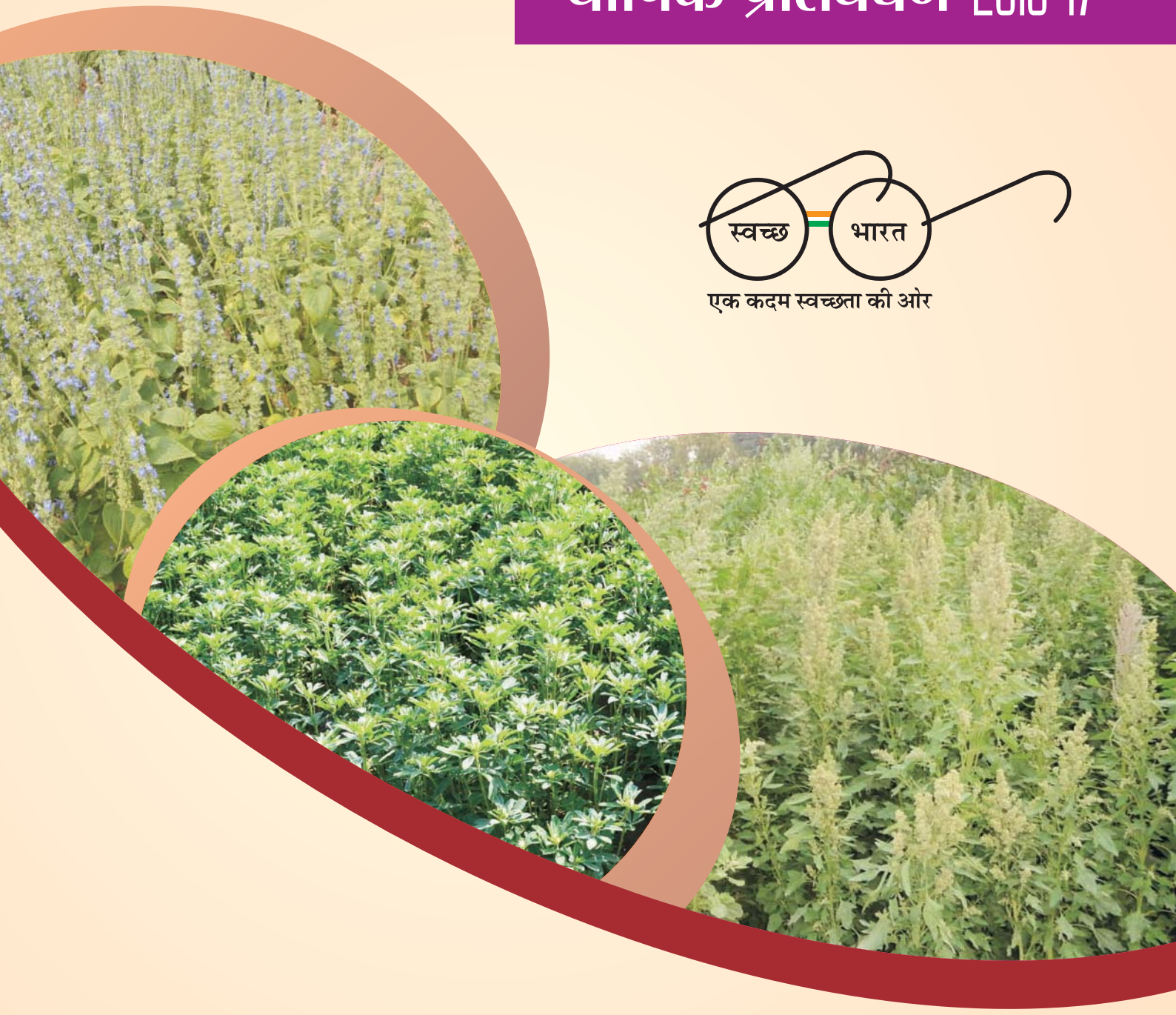

स्वच्छ भारत

एक कदम स्वच्छता की ओर

कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर

जोधपुर - 342 304 (राजस्थान)

वार्षिक प्रतिवेदन

2016 - 2017

कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर

जोधपुर - 342 304 (राजस्थान)

संपादक एवं समन्वयक:

डॉ. बलवन्त सिंह राजपुरोहित

निदेशक, प्राथमिकता, निगरानी एवं मूल्यांकन

सम्पादक मण्डल:

डॉ. बी.आर. चौधरी, निदेशक अनुसंधान

डॉ. ईश्वर सिंह, निदेशक प्रसार शिक्षा

डॉ. भारत सिंह भीमावत, अधिष्ठाता, कृषि महाविद्यालय, सुमेरपुर–पाली

डॉ. वीरेन्द्र सिंह जैतावत, अधिष्ठाता, कृषि महाविद्यालय, मण्डोर–जोधपुर

डॉ. सीताराम कुम्हार, अतिरिक्त निदेशक (बीज)

डॉ. मनमोहन सुन्दरिया, सहायक आचार्य, कीट विज्ञान

डॉ. मूलाराम, सहायक आचार्य, शस्य विज्ञान

प्रकाशक:

निदेशक, प्राथमिकता, निगरानी एवं मूल्यांकन

कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर

Email: drpmeaujodhpur@gmail.com

मुद्रक:

एवरग्रीन प्रिण्टर्स, जोधपुर 9414128647

विषय सूची

	प्राक्कथन	i
	कार्यकारी सारांश	v
1.	संस्थान परिचय	1
2.	कृषि अनुसंधान	13
3.	कृषि प्रसार शिक्षा	24
4.	कृषि शिक्षा	
	(अ) कृषि महाविद्यालय, मण्डोर, जोधपुर	35
	(ब) कृषि महाविद्यालय, सुमेरपुर–पाली	42
	(स) कृषि महाविद्यालय एवं कृषि डिप्लोमा संस्थान, नागौर	44
5.	प्रकाशन	47
6.	पुरस्कार एवं सम्मान	50

प्राक्कथन

कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर का वार्षिक प्रतिवेदन 2016–17 प्रकाशित करने पर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही हैं। उक्त वार्षिक प्रतिवेदन के अंतर्गत कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर द्वारा पिछले एक वर्ष में कृषि शिक्षा, कृषि अनुसंधान, कृषि प्रसार शिक्षा एवं प्रशासनिक गतिविधियों को संक्षिप्त रूप में संकलित किया गया हैं। इन मुख्य कार्यो में कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर के मुख्यालय मंडोर–जोधपुर केन्द्र व अन्य केन्द्रो पर स्थित पुराने ढांचों, भवन, अतिथि गृह आदि का जीर्णोद्वार तथा नये आधारभूत ढांचे का निर्माण, कृषि विश्वविद्यालय के कृषि अनुसंधान केन्द्र, मंडोर पर सड़कों का निर्माण, मुख्यालय व अन्य केन्द्रो जिनमें नागौर, समदड़ी (बाड़मेर) आदि पर चार दीवारी का निर्माण, मण्डोर स्थित सभागार का पूर्णतः जीर्णोद्वार, अनुसंधान प्रक्षेत्र फार्म के विभिन्न खण्डों में तारबंदी व अनुसंधान फार्म में सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली को स्थापित करना आदि हैं। कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर की नई वेबसाईट aujodhpur.ac.in का भी शुभारंभ डॉ एन एस राठौड, उपमहानिदेशक (शिक्षा) भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के द्वारा मई माह, 2016 में किया गया। कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर द्वारा विश्वविद्यालय के स्थापित होने के पश्चात् प्रथम बार महत्वपूर्ण ढंग से विश्वविद्यालय का तृतीय स्थापना दिवस मनाया गया। इस अवसर पर क्षेत्र के माननीय सांसदों के अतिरिक्त भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के महानिदेशक मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित हुऐं तथा उन्होंने कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर की अनुसंधान गतिविधियों को देखा और इन गतिविधियों की सराहना की।

वर्ष 2016–17 में कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर में कृषि स्नातक के प्रथम बेच के उत्तीर्ण होने के बाद रिकार्ड समय में विश्वविद्यालय द्वारा Self Study Report भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद को प्रस्तुत कर दिसम्बर माह में Accreditation कार्य का सफल आयोजन किया गया। प्रथम बार विश्वविद्यालय के स्वंय के स्तर पर परीक्षाओं का आयोजन करना जो पूर्व में पैतृक

विश्वविद्यालय स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर द्वारा आयोजित की जा रही थी, यह इस वर्ष का एक महत्वपूर्ण कार्य रहा।

वर्ष 2016–17 में देश विदेश के कई ख्याति प्राप्त कृषि वैज्ञानिकों ने कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर का भ्रमण किया और यहां चल रही विभिन्न गतिविधियों के बारे में जानकारी प्राप्त की जिनमें प्रमुख रूप सें कृषि वैज्ञानिक भर्ती बोर्ड के अध्यक्ष डॉ गुरूबचन सिंह, क्रिक फाउन्डेशन, यू.के किंगडम के डॉ एडवर्ड साउथन, सोमालिया के ग्वार वैज्ञानिक डॉ ईब्राहिम, स्लोवेनिया की डॉ माजा जूर्क और देश की ख्याति प्राप्त संस्थानों के वैज्ञानिकों ने इस विश्वविद्यालय का भ्रमण किया। वर्ष 2016–17 में कृषि महाविद्यालय, मंडोर एवं कृषि महाविद्यालय, सुमेरपूर के भवनों का प्रथम चरण का कार्य पूर्ण हुआ, इन महाविद्यालयों में प्रयोगशाला, पुस्तकालय और कम्प्यूटर लेब की उत्कर्ष्ठ स्थापना, विद्यार्थियों के अध्यापन हेतु बेहतरीन कक्षा कमरों की स्थापना करना आदि मुख्य कार्य रहे। वर्ष 2016–17 में विश्वविद्यालय की प्रथम अनुसंधान परिषद की बैठक, प्रथम प्रसार शिक्षा परिषद की बैठक, तृतीय विद्या परिषद की बैठक एवं प्रबंध मंडल की द्वितीय बैठक आयोजित कर वैज्ञानिकों और अशैक्षणिक कर्मचारियों के चयन हेतु विभिन्न महत्वपूर्ण फैसलें लेकर मापदण्ड निर्धारित करना। छात्रों की भागीदारी से बड़े पैमाने स्वच्छता अभियान चलाना। विश्वविद्यालय द्वारा गोदित गांव नेवरा रोड़ में वैज्ञानिकों, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों की सहभागिता से गोदित गांव के विकास हेतु विभिन्न महत्वपूर्ण कार्यो का संचालन करना। कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर के लिए राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के अंतर्गत कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर को अगले पांच वर्षो के लिये 34 करोड़ रू. एवं कृषक प्रथम परियोजना के अंतर्गत 1.00 करोड़ रू. भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा स्वीकृत की गई। बीज उत्पादन के क्षेत्र में बाजरे के बीज उत्पादन के लिये विशेष प्रयास कर कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर के कृषि अनुसंधान केन्द्र, मंडोर फार्म प्रक्षेत्र पर बाजरे की नई किस्म एमपीएमएच 17 के अंतर्गत 6.0 हेक्टेयर क्षेत्र में सफल संकर बाजरा बीज का उत्पादन लेकर लगभग 65 क्विंटल बीज पैदा कर किसानों को प्रदान किया गया और जिसका किसानों के खेत पर बहुत सकारात्मक परिणाम मिलना भी महत्वपूर्ण उपलब्धी रही।

कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर द्वारा खरीफ 2016 के दौरान दलहन व अन्य फसलों का 1000 क्विंटल उत्पादन किया गया, जिनमें मूंग, मोठ आदि सम्मिलित हैं। इसको देखते हुऐ इस वर्ष केन्द्र सरकार द्वारा कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर के जालोर व नागौर जिले में दो Seed Hubs का आवंटन कृषि एवं कृषक कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा किया गया जिसके लिये 3. 00 करोड़ की धनराशि विश्वविद्यालय को दो बीज केन्द्र की स्थापना हेतु मंजूरी दी गई। अनार जैसी महत्वपूर्ण अर्द्धशुष्क व शुष्क जलवायु फल फसल में आने वाली महत्वपूर्ण बीमारियों जैसें जीवाणु झुलसा व सूत्रकृमि' से होने वाले नुकसान के बारे में दिनांक 10 दिसम्बर, 2016 को राष्ट्रीय कार्यशाला का सफल आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में प्रदेश के करीब 200 अनार उत्पादक किसानों द्वारा भाग लिया। पण्डित दीनदयाल उपाध्याय जनशताब्दी के अवसर पर दिनांक 24 सितम्बर, 2016 को पश्चिम भारत के कई प्रगतिशील किसानों को अवार्ड देकर सम्मानित किया गया। प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना अंतर्गत किसान मेले का आयोजन तीन कृषि

विज्ञान केन्द्रो नागौर, जालौर व सिरोही जिले में सफल आयोजन किया गया। दिनांक 5 दिसम्बर, 2016 को अंतर्राष्ट्रीय मृदा दिवस के रूप में विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान केन्द्रों पर आयोजित किया गया इस दिवस के मौके पर किसानों को मृदा स्वास्थ्य कार्डो का वितरण किया गया। दिनांक 23 से 29 दिसम्बर, 2016 को विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान केन्द्रों, सिरोही, 27 दिसम्बर, 2016 व मौलासर 25 दिसम्बर, 2016 को जय किसान जय विज्ञान दिवस का भी आयोजन किया गया। राज्य सरकार द्वारा आयोजित ग्लोबल राजस्थान एग्रीटेक मीट (ग्राम) 2016 में कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर ने बढ़ चढ़ कर भाग लिया। मै इस वार्षिक प्रतिवेदन के प्रकाशन तथा समस्त वार्षिक गतिविधियों व कार्यों के सफल क्रियान्वयन हेतु समस्त वैज्ञानिकों व कर्मचारियों को हार्दिक बधाई देता हूँ। मुझे आशा तथा पूरा विश्वास हैं कि आने वाले वर्ष में कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर और आगे प्रगति करेगा।

(बलराज सिंह)
कुलपति
कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर

कार्यकारी सारांश

कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर की स्थापना राज्य के पश्चिमी क्षेत्र में कृषि अनुसंधान, प्रसार शिक्षा एवं कृषि

शिक्षा के क्षेत्रों में विकास, प्रचार प्रसार के कार्यों को निष्पादित कर क्षेत्र की समग्र कृषि एवं कृषि आधारित

क्रिया कलापों को उन्नयन कर विकासोनोमुखी बनाने हेतु किया गया।

यह एक नव सृजित संस्थान हैं। विश्वविद्यालय के कार्य क्षेत्र में छः जिलों जोधपुर, बाड़मेर, पाली, जालोर, सिरोही एवं नागौर का भू–भाग आता हैं। विश्वविद्यालय के कार्य क्षेत्र में जलवायु विषम परिस्थितियों वाली तथा कृषि कार्यों को चुनौती प्रदान करने वाली हैं। इस क्षेत्र में वर्षा कम अनियमित, अधिक तापक्रम, तेज/गरम हवाऐं कृषि को प्रभावित करती हैं। क्षेत्रफल की दृष्टि राज्य का 28 प्रतिशत भाग इस विश्वविद्यालय का कार्यक्षेत्र हैं। इस भू–भाग में औद्योगिकीकरण कम है तथा कृषि एवं पशुपालन ही आजीविका का मुख्य साधन है।

विश्वविद्यालय कार्यक्षेत्र में कृषि जलवायु खण्डों में स्थित कृषकों को नवीनतम कृषि तकनीकी/प्रौद्योगिकी उपलब्ध करा उत्पादकता बढ़ाने, लागत घटाने, जल एवं मृदा जैसे प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग वैज्ञानिक पद्वति अपना कर कृषि के समग्र विकास हेतु दो कृषि अनुसंधान केन्द्र (मण्डोर–जोधपुर, केशवाना–जालोर) तथा तीन कृषि अनुसंधान उप–केन्द्रों (सुमेरपुर–पाली, समदड़ी–बाड़मेर तथा नागौर) पर कृषि अनुसंधान कार्य किया जा रहा हैं। इन केन्द्रों पर बाजरा, मूंग, मोठ, ग्वार, तिल, अरण्ड, सरसों, राजगीरा, गेंहू, जीरा, इसबगोल, मैथी इत्यादि फसलों पर अनुसंधान कार्य जारी हैं। मुख्य फसलों के अतिरिक्त निर्यात की जाने वाली फसलें/उनसे प्राप्त उत्पाद जैसे जीरा, अरण्डी, मसालों एवं औषधीय महत्त्व (इसबगोल) वाली फसलों पर अनुसंधान पर विशेष ध्यान दिया जा रहा हैं। उद्यानिकी फसलों जैसे की प्याज, लहसुन, गाजर, आलू पर भी अनुसंधान प्रारंभिक स्तर पर शुरू किया जा चुका हैं।

नवीनतम कृषि तकनीकों के प्रचार प्रसार तथा आवश्यक आंशिक संशोधन हेतु निदेशालय, कृषि प्रसार शिक्षा के अधीनस्थ छः कृषि विज्ञान केन्द्र, मौलासर – नागौर, अठियासन – नागौर, फलौदी – जोधपुर, केशवाना – जालोर, गुड़ामालानी – बाड़मेर एवं सिरोही एवं क्षेत्रों के किसानों को विभिन्न कार्यक्रमों द्वारा समस्याओं का निराकरण व नवीन तकनीकों की जानकारी करवाने हेतु निरंतर प्रयासत हैं।

विश्वविद्यालय में तीन कृषि महाविद्यालय (मण्डोर – जोधपुर, सुमेरपुर – पाली तथा नागौर) संचालित किये जा रहे हैं। वर्तमान में कृषि महाविद्यालय मण्डोर – जोधपुर में स्नात्तक तथा स्नातकोत्तर शिक्षण कार्य किया जा रहा हैं तथा सुमेरपुर – पाली तथा नागौर के महाविद्यालयों में स्नात्तक स्तर तक का शिक्षण कार्य किया जा रहा हैं तथा कृषि में स्नातकोत्तर अध्ययन कृषि महाविद्यालय मण्डोर – जोधपुर में इस वर्ष (2016–17) बागवानी, शष्य तथा पौध प्रजनन एवं अनुवांशिकी में शुरू किया गया है

विश्वविद्यालय की लगभग संपूर्ण गतिविधियों के बजट भार राज्य सरकार की योजना, गैर – योजना तथा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली द्वारा उपलब्ध करवाया जा रहा हैं। यह विश्वविद्यालय अपने कार्यक्षेत्र के किसानों की प्रगति हेतु अनुसंधान, कृषि प्रसार तथा कृषि शिक्षा जैसे विभिन्न क्रियाकलापों द्वारा राज्य सरकार एवं केन्द्र सरकार की योजनाओं अनुसार सतत् प्रयासरत हैं।

कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर के प्रबंध मण्डल की द्वितीय बैठक दिनांक 21.10.2016 को कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर माननीय कुलपति डॉ बलराज सिंह की अध्यक्षता

में आयोजित की गई। माननीय कुलपति ने विश्वविद्यालय में चल रही विभिन्न अनुसंधान एवं विकासात्मक गतिविधियां तथा राष्ट्रीय कृषि विकास परियोजना (आर.के.वी.वाई) के अन्तर्गत कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर को वर्ष 2016–17 में नवीन स्वीकृत 9 परियोजनाओं, भवन निर्माण की प्रगति, विश्वविद्यालय परिसर में पुर्ननिर्माण कार्य, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा दलहन बीज उत्पादन हेतु दो नये केन्द्रों की स्वीकृति, जायद ऋतु में बाजरा की संकर किस्म एम.पी.एम.एच. 17 का बीज उत्पादन, कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर के कार्य क्षेत्र में पाली जिले का दूसरा कृषि विज्ञान केन्द्र की स्थापना हेतु चयनित जमीन का आई.सी.ए.आर. द्वारा गठित कमेटी द्वारा अवलोकन, जालोर जिले में दूसरा कृषि विज्ञान केन्द्र की स्थापना हेतु सांचौर में चयनित भूमि के आवंटन का प्रस्ताव राज्य सरकार को प्रेषित तथा विश्वविद्यालय का आई.सी.ए.आर. द्वारा मान्यता प्राप्त हेतु रिपोर्ट आदि की जानकारी से अवगत कराया।

कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर के विद्या परिषद की तृतीय बैठक दिनांक 5.07.2016 को कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर माननीय कुलपति डॉ बलराज सिंह की अध्यक्षता में आयोजित की गई। माननीय कुलपति ने शिक्षण के नवीन तरीकों को अपनाकर शिक्षा में छात्रों की रूचि पैदा करने पर बल दिया। उन्होंने संकाय सदस्यों से यह भी आग्रह किया कि कौशल विकास पर शिक्षा प्रदान करने के लिए नये पाठ्यक्रम विकसित किये जायें।

कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर की वित्त समिति की बैठक दिनांक 10.08.2016 को माननीय कुलपति डॉ. बलराज सिंह की अध्यक्षता में आयोजित की गई। बैठक में बजट वित्त वर्ष 2016–17 पर चर्चा व विचार विमर्श किया गया तथा पिछली बैठक में लिए निर्णयों की पुष्टि की गई।

कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर की अनुसंधान परिषद की प्रथम बैठक का आयोजन कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर में दिनांक 7.07.2016 को किया गया। अनुसंधान परिषद् के मेम्बर सेक्रेटरी डॉ. बी. आर. चौधरी, निदेशक अनुसंधान ने अनुसंधान निदेशालय की गतिविधियों की जानकारी दी एवं अनुसंधान निदेशालय द्वारा तैयार विभिन्न परियोजना प्रस्तावों के प्रेषण सम्बन्धित जानकारी देकर परिषद् से सहमति प्राप्त की गई।

कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर की प्रसार शिक्षा परिषद् की प्रथम बैठक दिनांक 07 जुलाई 2016 को आयोजित की गई। प्रसार शिक्षा परिषद् के मेम्बर सेक्रेटरी डॉ. ईश्वर सिंह ने प्रसार शिक्षा निदेशालय की गतिविधियों की जानकारी इस बैठक में प्रदान की गई एवं प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा तैयार विभिन्न परियोजना प्रस्तावों के प्रेषण सम्बन्धित जानकारी देकर परिषद् से सहमति प्राप्त की गई।

कृषि महाविद्यालय, मण्डोर–जोधपुर एवं सुमेरपुर–पाली के भवन निर्माण का प्रथम चरण का कार्य पूर्ण कर लिया गया हैं तथा नये परिसर (भवन) में कक्षायें प्रारंभ कर दी गई हैं।

कृषि महाविद्यालय, नागौर के भवन निर्माण का कार्य प्रगति पर है। महाविद्यालय का प्रस्तावित भवन पूर्णतः मौसम परिस्थिति अनुकूल होगा जिसमें वर्षा जल संरक्षण, इन्सूलेटेड बाह्य दीवारें तथा बिजली के लिये सौर उर्जा का उपयोग हेतु भवन में प्रावधान भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, जोधपुर के अनुरूप रखे गये हैं।

विश्वविद्यालय में रिक्त पदों को भरने हेतु राज्य सरकार की स्वीकृति प्राप्त कर ली गई है तथा इन्हें भरने की प्रक्रिया जारी है।

राज्यपाल महोदय एवं कुलाधिपति के निर्देशानुसार एक गांव नेवरा रोड़ तहसील औसियां–जोधपुर का चयन किया गया। गांव को स्मार्ट बनाने हेतु सुझाव एवं देखरेख हेतु वैज्ञानिकों/अधिकारियों की गठित एक समिति देखरेख की कर रही हैं।

इस वर्ष (2016–17) कृषि में स्नातकोत्तर अध्ययन (बागवानी, शष्य एवं पौध प्रजनन एवं अनुवांशिकी) शुरू कर दिया गया हैं।

कुलपति समन्वय समिति की बैठक में लिये गये निर्णयों तथा राजभवन सचिवालय द्वारा प्रदत्त निर्देशों की अनुपालना की जा रही हैं। जिसके तहत् शिक्षा की गुणवत्ता को लागू करना, विश्वविद्यालय के शैक्षणिक वातावरण में सुधार करना, मार्किंग सिस्टम लागू करना तथा विद्यार्थीयों की कक्षाओं में 75 प्रतिशत उपस्थिति की अनिवार्यता सुनिश्चित की जा रही हैं।

कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर का तृतीय स्थापना दिवस दिनांक 14.09.2016 को उल्लासपूर्ण, रूप से मनाया गया। समारोह के मुख्य अतिथि डॉ त्रिलोचन महापात्रा, सचिव, कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग, कृषि एवं कृषक कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार एवं महानिदेशक–भारतीय कृषि अनुंसधान परिषद्, नई दिल्ली, विशिष्ठ अतिथि श्री रामनारायण डूंडी, सांसद (राज्यसभा) एवं जोधपुर से लोकसभा सांसद श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत थें। इस अवसर पर अपने उद्बोधन में सर्वप्रथम डॉ महापात्रा ने विश्वविद्यालय के बदलते स्वरूप एवं प्रगति की राह पकड़ने के लिये कुलपति डॉ बलराज सिंह को बधाई दी और परिषद की तरफ से हर संभव सहयोग करने का आश्वासन दिया।

डॉ. बलराज सिंह, कुलपति, कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर के मार्गदर्शन में अंर्तराष्ट्रीय योग दिवस (21 जून 2016), पृथ्वी दिवस (22 अप्रेल 2016), विश्व पर्यावरण दिवस (5 जून 2016), आयोजित हुई। इसमें कॉफी संख्या में छात्र–छात्राओं के साथ कृषि महाविद्यालय व विश्वविद्यालय के कर्मचारीगण ने भाग लिया।

सुपारी एवं मसाला विकास निदेशालय (कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार), कालीकट्ट, केरल द्वारा वित्तीय पौषित योजना के अंतर्गत कृषि अनुसंधान केन्द्र, मण्डोर–जोधपुर द्वारा बीजीय मसालों का उन्नत बीज उत्पादन तथा वितरण, बीज विधायन तथा भण्डारण हेतु बुनियादी ढाँचा विकसित करना, अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों द्वारा प्रौद्योगिकी का प्रसार–प्रचार, प्रशिक्षण कार्यक्रम, सेमीनार, कार्यशाला तथा किसान गोष्ठी का आयोजन करना, उन्नत तकनीकी का प्रचार प्रसार इत्यादि पर कार्य किया जा रहा हैं।

क्षेत्रीय अनुसंधान एवं विस्तार सलाहकार समिति (जेड.आर.ई.ऐसी.) खरीफ–2016 की बैठक दिनांक 29 फरवरी तथा 1 मार्च 2016 को आयोजित की गई। क्षेत्रीय अनुसंधान एवं विस्तार सलाहकार समिति (जेड.आर.ई. ऐसी.) रबी–2016–17 की बैठक दिनांक 20 तथा 21 सितम्बर 2016 को आयोजित की गई। इन बैठको में पैकेज ऑफ प्रैक्टिसेज में नवीन कृषि तकनीकों की सिफारिश की गई।

अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना, बाजरा द्वारा विगत वर्ष मे तीन किस्में भारत सरकार द्वारा अधिसूचित की गई तथा नौ किस्में अधिसूचना के लिए स्वीकृत की गई। राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन (एन.एफ.एस. एम) कार्यक्रम के तहत 220 अग्रिम पंक्ति प्रर्दशन सफलता पूर्वक लगाऐ गये। संकर बाजरा की उन्नत किस्मों के प्रदर्शन में एक दिवसीय किसान दिवस में 200 किसानों को कृषि की उन्नत तकनीकी ज्ञान से अवगत कराया गया।

संकर बाजरे का बीज उत्पादन कार्यक्रम कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर द्वारा जायद मौसम 2016 (फरवरी–जून) में सफलतापूर्वक लिया गया। इस बीज द्वारा किसानों के खेतों पर उगाई गई फसल के परिणाम अन्य किस्मों के मुकाबले बहुत ही प्रभावशाली व उत्साहवर्द्धक रहे।

राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के तहत् 9 परियोजनाएं स्वीकृत की गई। जिनमें नवीन फसल क्विनवा, चीया की उत्पादन तकनीक, ईसबगोल की उन्न्त किस्में, मेंहदी की उत्पादन तकनीक और अनुवांशिकी सुधार, फलों के वृद्धिकरण हेतु मॉडल नर्सरी का निर्माण, राष्ट्रीय स्तर पर

विकसित उद्यानिकी फसलों की किस्मों का रेतीले एवं अर्द्ध रेतीले मौसम में उत्पादन बढ़ाने हेतु विविध वातावरण में मूल्यांकन, किसान कौशल विकास केन्द्र स्थापित करने, ए. आई.टी.आई.सी. (एटिक) की स्थापना, डिजीटल पुस्तकालय व किसानों के सूचना आदान प्रदान हेतु प्रशिक्षण एवं उच्च गुणवत्ता के बीज की प्रौसेसिंग व ग्रेडिंग की सुविधा को सुदृढ़ करने हेतु 34 करोड़ रूपये स्वीकृत किये गये।

कृषि अनुसंधान केन्द्र, मण्डोर–जोधपुर पर आत्मा परियोजना के अंतर्गत कृषक प्रशिक्षण, अनार की उत्पादन तकनीकी एवं उद्यान प्रबंधन विषय पर राष्ट्रीय कार्यशाला, समेकित नाशीजीव प्रबन्धन हेतु कार्यशाला, जैविक खेती का महत्त्व एवं तकनीकी विषय पर दो दिवसीय कृषक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें जिले के लगभग 800 किसानों, वैज्ञानिकों एवं शोधार्थियों के भाग लिया।

कृषि अनुसंधान केन्द्र, केशवाना–जालोर एवं कृषि विज्ञान केन्द्र, नागौर पर सीड हब 3 वर्ष के लिये स्वीकृत किये गये, जिसमें प्रत्येक हब को 1.50 करोड़ रूपये का प्रावधान किया गया।

कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर के वैज्ञानिकों एवं शिक्षकों द्वारा 13 कार्यशाला/सेमीनार, परिसंवाद, सम्मेलन में भाग लिया गया।

कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर के वैज्ञानिकों एवं शिक्षकों द्वारा कुल 22 अनुसंधान प्रपत्र, एक पुस्तक, तीन पुस्तक अध्याय, 6 फोल्डर एवं विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में 22 लेख प्रकाशित किये गये।

विश्वविद्यालय के विभिन्न केन्द्रों पर फसलों की अलग–अलग किस्मों का रबी 2015–16 में लगभग 280 क्विंटल बीज तथा खरीफ 2016 में लगभग 969 क्विंटल बीज उत्पादित किया गया। इसी के साथ विश्वविद्यालय के अथक प्रयासों द्वारा संकर बाजरा एम.पी.एम.एच. 17 के मादा पैतृक का 4.34 क्विंटल व नर पैतृक का 4.49 क्विंटल बीज मण्डोर व सुमेरपुर केन्द्रों पर उत्पादित किया गया।

कृषि विश्वविद्यालय के अधीनस्थ कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा किसानों के खेत पर उन्नत कृषि प्रौद्योगिकी के प्रचार प्रसार के अंतर्गत इस वर्ष कुल 949 प्रदर्शन लगाये गये। इसमें से संभाग की खरीफ फसलों (ग्वार, मूंग, मोठ, अरण्डी, बाजरा और तिल) पर 387, रबी फसलों, सब्जियों और फलों (जीरा, चना, गेंहू, राया, मैथी, धनिया) पर 562 तथा जानवरों में संतुलित आहार व खनिज मिश्रण पर 20 प्रदर्शन लगाये गये। फसलों पर लगाये गये प्रदशनों में खरीफ के दौरान उन्नत प्रौद्योगिकी के असर की वजह से औसतन 18 से 27 प्रतिशत तक उपज में वृद्धि दर्ज की गई।

कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा कृषकों की अति महत्वपूर्ण समस्याओं एवं उनके समाधान के लिए प्रक्षेत्र परीक्षण आयोजित किये जाते हैं। इन परीक्षणों में अनुसंधान केन्द्रों द्वारा सुझाई गई तकनीक में क्षेत्र विशेष के अनुरूप सूक्ष्म संशोधन किया जाता है। गत वर्ष कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा 7 प्रक्षेत्र परीक्षण आयोजित किये गये जिसमें फसलोत्पादन, पशुपालन, उद्यानिकी से संबंधित थे।

कृषि प्रसार से जुड़े अधिकारियों व कार्यकर्ताओं को कृषि की नवीनतम प्रौद्योगिकी से अवगत कराने के उद्देश्य से कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा 40 संस्थागत प्रशिक्षण, कृषक एवं कृषक महिलाओं के लिये 53 असंस्थागत प्रशिक्षण गांवों में आयोजित किये गये।

कृषि विज्ञान केन्द्र, अठियासन, फलौदी एवं मौलासर मे खरीफ एवं रबी किसान सम्मेलन एवं तकनिकी सप्ताह का आयोजन किया गया। इन किसान सम्मेलनों में किसानों को उनके क्षेत्र में उगाई जाने वाली फसलों के बारे में नवीन कृषि तकनीकि एवं बीज उपलब्धता तथा उस

क्षेत्र के जनप्रतिनिधियों को कृषि विज्ञान केन्द्रों की गतिविधियों के बारे में जानकारी उपलब्ध करवाई गयी। कृषि विज्ञान केन्द्र, अठियासन में रबी पूर्व किसान सम्मेलन में कृषि मंत्री, राजस्थान सरकार श्री प्रभुलाल सैनी ने भाग लिया।

प्रसार शिक्षा निदेशालय, कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर के संयुक्त तत्वाधान में 10 दिसम्बर 2016 को उन्नत अनार उत्पादन पर राष्ट्रीय स्तरीय किसान गोष्ठी आयोजित की गई, जिसमें देश के विभिन्न भागों से करीब तीन सौ अनार उत्पादक किसानों ने भाग लिया।

सभी कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा अंर्तराष्ट्रीय मृदा दिवस का आयोजन किया गया। कृषि विज्ञान केन्द्र, फलौदी ने विश्वविद्यालय मुख्यालय पर मृदा स्वास्थ्य दिवस का आयोजन किया, जिसमें भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के उप महानिदेशक, शिक्षा डॉ. एन. एस. राठौड़ ने भाग लिया। कृषि विज्ञान केन्द्र, मोलासर पर आयोजित कार्यक्रम में नावा, विधायक श्री विजयसिंह ने किसानों को सम्बोधित किया एवं मृदा स्वास्थ्य कार्ड वितरित किए। मृदा दिवस के आयोजन पर किसानों को कृषि विज्ञान केन्द्रों एवं कृषि विभाग की मृदा परीक्षण प्रयोगशाला द्वारा मृदा परिक्षण पश्चात् तैयार मृदा स्वास्थय कार्ड वितरित किये गये तथा मृदा जांच की उपयोगिता के बारे में विषय विशेषज्ञों द्वारा किसानों को जानकारी उपलब्ध कराई गई।

किसान नेता एवं पूर्व प्रधानमंत्री स्व. चौधरी चरणसिंह की जयंती के अवसर पर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली के निर्देशों के अनुसार सभी कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा जय किसान जय विज्ञान दिवस सप्ताह मनाया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्रों एवं विस्तार निदेशालय द्वारा 5 कृषक–वैज्ञानिक संवाद आयोजित किये गये। जिसमें करीब 165 कृषक एवं कृषक महिलाओं ने भाग लिया तथा कृषकों की समस्याओं का समाधान किया

प्रसार शिक्षा निदेशालय एवं कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर के संयुक्त तत्त्वाधान में आत्मा परियोजना के वित्तीय सहयोग से कृषि अनुसंधान केन्द्र, मण्डोर–जोधपुर पर फरवरी 2016 को किसान मेला आयोजित किया गया। मेले में करीब 1500 किसानों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा विभिन्न तकनिकियों एवं उन्नत किस्मों को अधिक से अधिक कृषकों तक पहुँचाने हेतु 13 प्रक्षेत्र दिवसों का आयोजन किया, जिसमें कुल 580 किसानों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्रों ने विभिन्न तकनिकीयों को किसानों तक पहुँचाने हेतु कृषि मेला जोबनेर, कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर एवं काजरी कृषि मेला जोधपुर में प्रदर्शनियाँ लगाई।

कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर द्वारा 25 सितम्बर 2016 को दीन दयाल उपाध्याय अन्तोदय कृषि पुरस्कार समारोह का आयोजन किया गया। इस समारोह इस में कृषि में नवाचार अपनाने वाले गुजरात के एक एवं जोधपुर संभाग के सात किसानों को दीन दयाल उपाध्याय अन्तोदय कृषि पुरस्कार प्रदान किया गया।

राजस्थान सरकार एवं फीकी के संयुक्त तत्त्वाधान में आयोजित ग्लोबल राजस्थान एग्रोटेक मीट (ग्राम 2016) दिनांक 09 से 11 नवम्बर 2016 में विस्तार शिक्षा निदेशालय, कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर द्वारा एक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस उद्यानिकी जाजम चौपाल में किसानों से चर्चा करते समय राज्य की मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे, काबिना मंत्री श्री राजपाल सिंह शेखावत, श्री हेमाराम चौधरी, श्री रामपाल जाट, श्री प्रभुलाल सैनी एवं काफी संख्या में विधायकगणो ने भाग लिया और किसानों, कुलपति महोदय, निदेशक प्रसार शिक्षा एवं उपस्थित वैज्ञानिकों से चर्चा की।

कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर द्वारा नेवरा रोड़ गांव को माननीय राज्यपाल राजस्थान सरकार द्वारा प्राप्त निर्देशों

के तहत् गोद लेकर उसे स्मार्ट गांव में तब्दील करने की योजना बनाई गई। इसके अंतर्गत वर्ष 2016–17 में गांव के चयनित किसानों के खेतों पर खरीफ और रबी फसलों के 100 से अधिक अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन लगाये गये तथा इन फसलों की उन्नत तकनीकी जानकारी किसानों को उपलब्ध कराई गई। इसके अलावा स्मार्ट गांव में सफाई अभियान, कृषक वैज्ञानिक संवाद, किसान गोष्ठी कर किसानों को नशा मुक्ति, शौचालय निर्माण, प्लॉस्टिक थैलियों का उपयोग नहीं करने हेतु प्रेरित किया गया।

कृषि महाविद्यालय, मण्डोर जोधपुर, सुमेरपुर (पाली) व नागौर एवं कृषि डिप्लोमा संस्थान, नागौर में विद्यार्थियों को उच्च स्तरीय शिक्षा प्रदान करने एवं उनके सर्वांगीण व्यक्तित्व विकास के लिये आवश्यक शैक्षणिक वातावरण जैसे नियमित कक्षाओं का संचालन, सांस्कृतिक कार्यक्रम, खेल–कूद प्रतियोगिता, व्याख्यान इत्यादि का आयोजन समय–समय पर किया जा रहा हैं।

कृषि महाविद्यालय, मण्डोर, जोधपुर व सुमेरपुर–पाली में स्नातक शिक्षा का प्रथम बैच निकलते ही 27 अगस्त, 2016 को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् से इन महाविद्यालयों की मान्यता प्राप्त करने हेतु रिपोर्ट परिषद् को प्रस्तुत कर दी गई तथा परिषद् द्वारा दिनांक 6, 7 व 8 दिसम्बर, 2016 को दोनों कृषि महाविद्यालयों को मान्यता देने के सम्बन्ध में दौरा पूर्ण कर लिया गया।